बौद्ध धर्म के संस्थापक - गौतम बुद्ध का परिचय

डॉ. कमलेश कुमार

सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

प्राचीन इतिहास विभाग

SNSRKS COLLEGE SAHARSA

गौतम बुद्ध का जन्म 563 ई.पू. नेपाल की तराई में स्थित कपिलवस्तु के निकट लुम्बिनी (आम्रकुंज) में वैशाख पूर्णिमा के दिन हुआ था. इनके पिता का नाम सुद्धोधन था, जो कपिलवस्तु के शक्य गण के प्रधान थे. इनकी माता का नाम महामाया था, जो कोलिय गणराज्य की पुत्री थी.

जन्म के सातवें दिन ही गौतम बुद्ध के माता का देहांत हो गया इसीलिए इनका पालन पोषण इनकी मौसी प्रजापति गौतमी ने किया. बुद्ध के बचपन का नाम सिद्धार्थ था.

16 वर्ष की अवस्था में गौतम बुद्ध का विवाह शाक्य कुल की कन्या यशोधरा से हुआ. उनके पुत्र का नाम राहुल था. एक वृद्ध व्यक्ति, एक बीमार व्यक्ति, एक मृत व्यक्ति तथा एक योगी को देखकर बुद्ध ने सत्य की खोज के लिए सन्यासी बनने का निर्णय लिया तथा 29 वर्ष की आयु में गृह त्याग दिया. इसे **महाभिनिष्क्रमण** कहा जाता है.

बहुत लम्बे समय तक वे ज्ञान की खोज में वे इधर-उधर भटकते रहे. काफी भटकने और अनेक तरह की साधना करने के बाद सिद्धार्थ गया पहुंचे और वहां निरंजना नदी के तट पर एक पीपल के वृक्ष के नीचे समाधि लगायी. 48 वें दिन वैशाख पूर्णिमा के दिन उन्हें ज्ञान प्राप्ति हुई और वे बुद्ध कहलाये.

ज्ञान प्राप्ति के बाद बुद्ध सारनाथ आये तथा सारनाथ (ऋषि पत्तन या मृगदांव) में अपना पहला उपदेश अपने 5 पुराने मित्रों को दिया. इसे **धर्म चक्र महाप्रवर्तन** कहा जाता है. सारनाथ में बौद्धसंघ की स्थापना हुई|

बुद्ध सर्वाधिक उपदेश कौशल देश की राजधानी श्रावस्ती में दिए. वे अपने जीवन के अंतिम पड़ाव में हिरण्यवती नदी तट पर स्थित कुशीनारा पहुंचे. यही 483 ई.पू. में वैशाख पूर्णिमा के दिन 80 वर्ष की उम्र में बुद्ध की मृत्यु हो गई. इसे **महापरिनिर्वाण** कहा जाता है.

बौद्ध धर्म में सर्वोच्च ज्ञान को निर्वाण कहा गया है. निर्वाण बुद्ध को भी प्राप्त हुआ तथा आगे कई आचार्यों ने भी प्राप्त किया. बौद्धों के अनुसार निर्वाण इच्छाओं की पूर्ण समाप्ति के बाद प्राप्त होता है.